2 जुलाई 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 7 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भिण्ड क्षेत्रीय -

आठवाँ सामूहिक बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर, भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 11 जून तक आठवाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी अमायन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. कल्पना बेन सागर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी भिण्ड के अतिरिक्त श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा, श्री धरसेन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन अलीगढ, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर, श्री आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन दिल्ली, ब्रह्मचारी विद्वानों, विदुषी बहनों, भूतपूर्व शास्त्री एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा ज्ञानगंगा को प्रवाहित किया गया।

दिनांक 1 जून को श्री सीमंधर जिनालय देवनगर में शिविर का उद्घाटन पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री ग्वालियर के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री इन्द्रसेनजी जैन गढाबलो भिण्ड ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विजयजी भंडारी चैन्नई उपस्थित थे। ध्वजारोहण श्री वज्रसेनजी जैन परिवार दिल्ली ने किया।

इस शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया था जहाँ पर कोई विद्वान नहीं पहुँच पाते हैं। सभी वर्गों के अनुसार (शिशु, बाल, किशोर, प्रौढ) पाठ्यक्रम बनाकर उसकी कक्षायें लगायी गई।

इस अवसर पर 171 विद्वानों के माध्यम से 9109 बालक-बालिकाओं सहित 14491 साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

दिनांक 11 जून को समापन समारोह मंगलायतन-अलीगढ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों की उपस्थिति में शिविर में सहयोग देने वाले 90 छोटे-बड़े विद्वानों व अनेक कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 26 मई से 2 जून तक द्वितीय आध्यात्मिक बाल संस्कार व प्रौढ शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन प्रात: 8 बजे भव्य जिनवाणी शोभायात्रा से हुआ।

इस अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित विवेकजी महाजन, पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर, पण्डित संजयजी राऊत आदि 29 विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस शिविर में वाशिम, चिखली, ढोरकीन, वडोद बाजार, सेलू, कलमनूरी आदि स्थानों से लगभग 750-800 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

समापन व पुरस्कार वितरण समारोह में अध्यक्ष श्री भरतभाऊ भोरे कारंजा एवं विशिष्ट अतिथि श्री हर्षवर्धनजी, श्री विलासजी जोगी, श्री अमोलजी पूर्णेकर थे।

शिविर का आयोजन पण्डित संजयजी राऊत एवं श्री रत्नाकरजी गाडेकर के मार्गदर्शन में तथा श्री चैतन्यजी गाडेकर, पण्डित किशोरजी धोंगडे व पण्डित चिन्तामणजी भुज के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) अवश्य लिखें। संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल एड्रेस हो तो अवश्य भेज देवें।

- मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,**
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन नं. -0141-2705581, 2707458,
फैक्स- 0141 - 2704127
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

80 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १३९

अब प्रस्तुत गाथा में पापास्रव के स्वरूप का कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

चरिया पमादबहुला कालुस्सं लोलदा य विसएसु।
परपरिदावपवादो पावस्स य आसवं कुणदि।।१३९।।

(हरिगीत)

प्रमादयुतचर्या कलुषता, विषयलोलुप परिणति।
परिताप अर अपवाद पर का, पाप आस्रव हेतु हैं।।१३९।।

बहु प्रमाद वाली चर्या, कलुषता, विषयों में लोलुपता, पर को परिताप देना तथा पर से अपवाद बोलने – पाप का आस्रव होता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्रदेव इस गाथा की टीका में कहते हैं कि बहु प्रमाद वाली चर्यारूप परिणति अर्थात् अति प्रमाद से भरे हुए आचरण रूप परिणति, कलुषता रूप परिणति, विषय लोलुपतारूप परिणति – ये पाँच अशुभभाव–द्रव्य पापास्रव को निमित्त रूप से कारणभूत हैं, इसलिए द्रव्य पापास्रव के प्रसंग का अनुसरण करने के कारण वे अशुभभाव भाव आस्रव हैं। और वे अशुभभाव जिनके निमित्त हैं, ऐसे पुद्गलों के अशुभकर्म–द्रव्य पापास्रव हैं।

इसी विषय को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

जग में प्रमाद रूपी क्रिया है अनादि ही की,
चित्त विषै मूढ़ता सौं अति ही कलुषता।
विषयौ मैं लोलताई पर कौं आतपताई,
परापवाद ताईसौं वाद रूप रूखता।।
एई पाँचों परिणति असुभ हैं भाव पल,
द्रव्य पार करता है आतम विमुखता।
ऐसा भाव द्रव्यपाप आपतैं निराग करै,
ग्यानी सरवंग सुद्धग्यान माँहि पुखता।।१२४।।

(दोहा)

पापरूप जब आप है, तब आपा अति अंध।
विकलरहित सुख मूढ़गत, करै विविधविधि बंध।।१२५।।

कवि कहते हैं कि जगत में अनादि से जीवों को प्रमाद परिणति है। मूढ़ता से चित्त में कलुषता है, विषयों में लोलुपता है, पर को दुःखदाई भाव है। इसप्रकार जीव अशुभ भावों वर्तता है तथा अपने आत्म स्वभाव से विमुख हो रहा है। ऐसे भाव से द्रव्य पाप होता है। ज्ञानी इन सबसे विमुख रहता है। यद्यपि उक्त भाव यदा–कदा ज्ञानी को भी होते हैं; परन्तु वह अधिकांश विरक्त रहता है।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि ''विषय–कषाय आदि अशुभ क्रिया से जीव के अशुभ परिणाम होते हैं, उन्हें भाव पापास्रव कहते हैं, उन भावास्रवों का निमित्त पाकर मन–वचन–काय के योग द्वारा जो जड़ परमाणु आते हैं, उसे द्रव्यास्रव कहते हैं। मन–वचन–काय के निमित्त से आत्मा के प्रदेशों का कम्पित होना योग है, ये योग कर्म परमाणु के आने में निमित्त होते हैं। द्रव्यदृष्टि से तो आत्मा में आस्रव होता ही नहीं है, परन्तु यहाँ ज्ञान प्रधान कथन है, इस कारण आत्मा का स्वरूप निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध से बताया है।

शान्तदशा की प्रतिबन्धक प्रमादसहित क्रिया मुनि को भी यदा–कदा आर्तध्यान के रूप में होती है, परन्तु उन्हें उस भाव का स्वामित्व नहीं होता। कलुषतता का परिणाम ज्ञानी व अज्ञानी दोनों को होता है, किन्तु दोनों की दृष्टि में बहुत बड़ा अन्तर होता है।

इसप्रकार इस गाथा में पापास्रव का स्वरूप बताया। ●

गाथा – १४०

प्रस्तुत गाथा में पापास्रव भावों के विस्तार का कथन है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

सण्णाओ य तिलेस्सा इंदियवसदा य अट्टरुद्दाणि।
णाणं च दुप्पउत्तं मोहो पावप्पदा होंति।।१४०।।

(हरिगीत)

चार संज्ञा तीन लेश्या पाँच इन्द्रियाधीनता।
आर्त–रौद्र कुध्यान अर कुज्ञान है पापप्रदा।।१४०।।

चार संज्ञायें, तीन लेश्यायें, पाँचों इन्द्रियों के विषय, आर्त–रौद्रध्यान रूप अशुभभावों में लगा हुआ ज्ञान और मोह – ये सब भाव पापप्रद हैं।

टीकाकार आचार्य श्री अमृतचन्द्र विस्तार से कहते हैं कि तीव्र मोह के विपाक से उत्पन्न होने वाली आहार–भय–मैथुन और परिग्रह संज्ञायें, तीव्रकषाय के उदय से अनुरंजित योग प्रवृत्ति, कृष्ण, नील, कापोत नामक ३ लेश्यायें, राग–द्वेष के उदय की उग्रता के कारण वर्तता हुआ इन्द्रियाधीनपना, राग–द्वेष के उद्रेक के कारण प्रिय के संयोग एवं अप्रिय के वियोग की वेदना से छुटकारे का विकल्प तथा हिंसानन्द, मृषानन्द, चौर्यानन्द एवं विषय संरक्षणानंद रूप रौद्रध्यान, निष्प्रयोजन अशुभकर्म में दुष्टरूप से लगा हुआ ज्ञान और सामान्य रूप से दर्शन एवं चारित्र मोहनीय के उदय से उत्पन्न अविवेक रूप मोह; यह भावपापास्रव द्रव्यपापास्रव का विस्तार करने वाला है।

उपर्युक्त भावपापास्रव के अनेक प्रकार द्रव्यपापास्रव के निमित्त हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

तीव्र मोह उदय होइ आहारादि संज्ञा चारि,
लेस्या तीन कृष्ण आदि परिनाम लेस हैं।

राग–द्वेष उदैवस इन्द्रिय अधीनताई,
इष्ट कै वियोग आदि आरत कलेस हैं ।।
कषाय क्रूरताई है, हिंसानन्द आदि रौद्र,
दुष्ट नयाधीन उथान मूढ़ता निवेस है ।
एई भावपापास्रव द्रव्य पाप आस्रव हैं,
इनसौ निराला आप सुद्ध उपदेस है।।१२७ ।।

(दोहा)

पुण्य–पाप तैं आपको, न्यारा करै जु कोइ ।
सो नर सारा सुख लहै, आपद पदकौं खोइ।।१२८ ।।

कवि हीरानन्दजी कहते हैं कि तीव्र कर्म के उदय में आहारादि चार संज्ञायें होती हैं तथा कृष्ण नील कापोत लेश्यायें होती हैं। राग–द्वेष के उदय से इन्द्रियों की अधीनता तथा रौद्रध्यान के परिणाम होते हैं। तत्त्वज्ञान और भेदविज्ञान होने पर ये कदाचित होते हैं, पर ज्ञानी इन्हें जानता है तथा यथाशक्ति इन्हें त्यागने का प्रयास भी करता है।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि तीव्र मोह के उदय से आहार, भय, मैथुन और परिग्रह – ये चार संज्ञायें होतीं हैं, वे पाप की कारण हैं।

आहार संज्ञा : अपने ज्ञान को आहार की प्रीति में रोक देना आहार संज्ञा है। आहार लेने के तीव्र भाव को आहार संज्ञा कहते हैं।

भय संज्ञा : आत्मा के निर्भय स्वभाव को भय में रोकना।

मैथुन संज्ञा : अपने ज्ञान को इन्द्रियों के विषयों में रोकना।

परिग्रह संज्ञा : अपने ज्ञान को परिग्रह में अटका देना परिग्रह संज्ञा है?

उक्त चारों ही संज्ञायें भूमिकानुसार ज्ञानी को भी चौथे, पाँचवें गुणस्थान में होती हैं, परन्तु ज्ञानी को ये संज्ञायें पुरुषार्थ की कमी के कारण होती हैं। पर ज्ञानी इन्हें हेय जानता है।

लेश्यायें : जीव अपने ज्ञानस्वभाव को भूलकर स्वयं को जितना योग की प्रवृत्ति में कषाय सहित जोड़ता है, उसे लेश्या कहते हैं।' ''कषायानुरंजित योग प्रवृत्ति लेश्या है'' उनमें कृष्ण, नील, कापोत – तीन अशुभ लेश्यायें हैं। अन्त की तीन लेश्यायें शुभ हैं।

इन्द्रियाधीनता : अतीन्द्रिय स्वभाव की दृष्टि छोड़कर इन्द्रियों के आधीन रहना पाप आस्रव है। जिन्हें अतीन्द्रिय स्वभाव का भान है, उन्हें अस्थिरता जन्य अल्प आस्रव होता है। जो मिथ्यादृष्टि इन्द्रियों के विषयों में रुचि लेता है, उन्हें मिथ्यात्व सहित होने से तीव्र आस्रव होता है।

अशुभ आर्तध्यान : इष्ट पदार्थों के वियोग व अनिष्ट पदार्थों के संयोग में राग–द्वेष करना तथा पीड़ा चिन्तन व निदान बंध करना – ये चार प्रकार का आर्तध्यान दुःखरूप है। ये भी पाप के कारण हैं।

ज्ञानी को भी साधक दशा में आर्तध्यान होता है; किन्तु पर के कारण नहीं होता। कभी–कभी मुनियों को अपनी स्वयं की कमजोरी के कारण आर्तध्यान होता है। जब भगवान ऋषभदेव मोक्ष गये, तब चक्रवर्ती भरतजी को खेद हुआ था, किन्तु उन्हें उस समय आत्मा का भान था। शुभ के प्रति होने से उनके ध्यान शुभ आर्त कहा जाएगा।

निदानबंध : अज्ञानी जीवों का जो ब्रत, तप आदि के फल में स्वर्गादि की प्राप्ति की भावना होती है। यह निदान आर्तध्यान है।

रौद्रध्यान : यह ध्यान अशुभ ही होता है, पाप का कारण ही होता है। ये भी चार प्रकार का है – १. हिंसानन्दी, मृषानन्दी, चौर्यानन्दी और परिग्रहानन्दी। ये ध्यान आनन्द रूप होते हैं।

ज्ञानी को पाँचवें गुणस्थान तक रौद्रध्यान होता, परन्तु उसे यह भान है कि ये परिणाम पापास्रव हैं, तो भी रागवर्तता है, इसकारण कभी–कभी ऐसे परिणाम हो जाते हैं, परन्तु वह उन्हें हेय मानता है।●

गाथा – १४१

विगत गाथा में पापास्रव भावों का कथन किया।

अब प्रस्तुत गाथा में संवरतत्व का स्पष्टीकरण किया जा रहा है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

इंदियकसायसण्णा णिग्गहिदा जेहिं सुट्ठु मग्गम्हि।
जावत्तावत्तेसिं पिहिदं पावासवच्छिद्दं।।१४१।।

(हरिगीत)

कषाय-संज्ञा इन्द्रियों का, निग्रह करें सन्मार्ग से।
वह मार्ग ही संवर कहा, आस्रव निरोधक भाव से।।१४१।।

जो व्यक्ति भलीभाँति मोक्षमार्ग में रहकर इन्द्रियों, कषायों और आहार, भय, मैथुन, परिग्रह संज्ञाओं का जितना निग्रह करते हैं, उनको उतना ही पापास्रव का छिद्र बंद होता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि पाप आस्रव के कथन के पश्चात् यह पाप के संवर का कथन है।

मुक्ति का मार्ग वस्तुतः संवर से ही प्रारंभ होता है। उसके निमित्त इन्द्रियों, कषायों तथा चार संज्ञाओं का जितने अंश में निग्रह किया जाता है, उतने अंश में पापास्रव का द्वार बन्द होता है।

उक्त गाथा के भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

इन्द्रिय संज्ञ कसाय का, निग्रह जावत काल।
तितना काल ढक्या रहै, पापास्रव का जाल।।१२९ ।।

(सवैया इकतीसा)

रत्नत्रय रूप मोक्ष मारग जिनेस कहया,
सोई आप रूप जानि उद्यम सु करना।
इन्द्रिय कषाय संज्ञा तीनौ की अवज्ञा करि,
निग्रह विधान सेती सुद्ध भाव भरना ।।
जैता काल तेता काल पापरूप द्वार रुकै,
दौनौं रूप जैसें तोय शुद्ध करना।
सोई सुभ संवर है कर्म वैरी संगर है,
गुन कौ अडंबर है आपरूप धरना।।१३० ।।

(दोहा)

नूतन कर्म निरोध का, संवर कहिए नाम।
पर–मिलाप तजि आपगत, शुद्धातम परिनाम।।१३१।।

उक्त काव्यों में कहा गया है कि जबतक पाँच इन्द्रियों के विषयों का, आहार, भय, मैथुन एवं परिग्रह रूप चार संज्ञाओं का तथा क्रोधादि कषायों का निग्रह होता है तब तक पापास्रव नहीं होता।

जिनेन्द्र देव ने रत्नत्रय को मोक्षमार्ग कहा है, उसे आप रूप जानकर अपने आत्मा को जानने–पहचानने तथा उसी में स्थिर होने का प्रयत्न करना तथा इन्द्रियों, कषायों, संज्ञाओं की उपेक्षा करके शुद्धभाव धारण करना, जब तक ऐसा पुरुषार्थ होगा तब तक पापास्रव रुकेगा। बस इस आस्रव का रुकना ही संवर है।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि ''आत्मा जो विचार करता है, उसमें मन निमित्त होता है तथा पर पदार्थों को जानने में इन्द्रियाँ निमित्त हैं। 'आत्मा ज्ञान स्वभावी हैं, वह इन्द्रियाँ व मन के बिना ही हैं। जो ऐसे अतीन्द्रिय आत्मा की रुचि करके, मन व इन्द्रियों की रुचि छोड़कर क्रोध–मान–माया–लोभ तथा चार संज्ञाओं के पाप परिणाम छोड़कर जिस समय स्वभाव की दृष्टि करता है, उसी समय मिथ्यात्व की अनुत्पत्ति हो जाती है तथा सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो जाता है।

देह मन वाणी के बिना तथा विकारी भावों के बिना जो मेरा ज्ञान–दर्शन–स्वभाव हैं, वह अन्तःतत्त्व है। यही मान्यता सम्यग्दर्शनरूप संवर का मार्ग है। यह संवर चौथे गुणस्थान से प्रगट होता है।

इन्द्रियाँ हैं, मन भी है, पुण्य–पाप के भाव हैं; ये सब होते हुए भी इनकी रुचि छोड़कर त्रिकाल स्वभाव की रुचि करना संवर है। संवर में सम्यग्दर्शन ज्ञान–चारित्र तीनों समा जाते हैं। संवर मोक्षमार्ग है। पाँचों इन्द्रियों एवं मन को जीतने से संवर होता है। चार संज्ञाओं की ओर ढलते परिणाम को रोककर स्वभाव में एकाग्र होना संवर है।

सम्यग्दृष्टि पशु हरी घास खाता हो, समकिती व्यक्ति हीरा–मणि का व्यापार करता हो, विषयों में रमता दिखता हो, कृष्ण, नील, कापोत आदि अशुभ लेश्याओं के परिणाम होते हों, उस स्थिति में भी आत्मा का भान होने के कारण नरक गति अनन्तानुबन्धी तथा मिथ्यात्व आदि ४१ कर्म प्रकृतियाँ नहीं बंधती। अतः मुमुक्षु को आत्मा को जानने–पहचानने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए।

इसप्रकार यथार्थ श्रद्धा की प्रेरणा देते हुए यहाँ कहा गया है कि कदाचित् चौथे गुणस्थान अविरत दशा में न तो इन्द्रियों के विरक्त हो पाया हो तथा न त्रस स्थावर जीवों की हिंसा से भी विरक्त हो पा रहा हो; किन्तु जो जिनेन्द्र भगवान कहे तत्त्व का यथार्थ रीति श्रद्धान करता है वह ४१ प्रकृतियों के बंध के अभाव के कारण अल्पकाल में मुनिव्रत धारण कर मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

अतः सर्वप्रथम यथार्थ आत्म श्रद्धान का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। इसप्रकार संवर की चर्चा की। ●

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)
ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2012

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 25 अगस्त 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 26 अगस्त 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग2 (प्रवेशिका द्वितीयखण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 27 अगस्त 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

–ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक – परीक्षा बोर्ड)

द्वितीय जैन जागृति शिक्षण शिविर संपन्न

बड़ौत (उ.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन, मुमुक्षु मण्डल दिल्ली एवं मुमुक्षु मण्डल बड़ौत के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 11 से 19 जून तक 'द्वितीय जैन जागृति शिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री नरेन्द्रकुमार, सुरेन्द्रकुमार, सचिन जैन परिवार बावली द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री सुरेशचंद, पंकज जैन परिवार द्वारा किया गया। शिविर की अध्यक्षता श्री विनोदकुमार जैन एडवोकेट बड़ौत ने एवं उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री राकेश जैन रूवी हैण्डलूम खेकड़ा ने की, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेशचंद जैन, श्री पंकज जैन (एम.डी.–पारस चैनल), श्री सुनीलकुमार जैन विश्वासनगर दिल्ली, श्री नरेन्द्रकुमार सौरभ जैन बावली आदि कई गणमान्य श्रेष्ठीगण उपस्थित थे।

उद्घाटन के दौरान भव्य जिनवाणी शोभायात्रा का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई के मार्मिक प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

यह शिविर दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा एवं उत्तराखण्ड के विभिन्न छोटे–बड़े 41 स्थानों पर लगाया गया, जहाँ देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे 80 विद्वानों ने तत्त्वप्रचार किया। शिविर में 2650 बच्चों सहित लगभग 3600 साधर्मियों ने जैनदर्शन के सिद्धांतों को समझकर धर्मलाभ लिया।

शिविर का समापन दिनांक 19 जून को दिल्ली में रखा गया। समारोह का ध्वजारोहण कृष्णानगर दिल्ली निवासी श्री सुभाषचंद जैन (नमन टैक्सटाइल) एवं विश्वासनगर निवासी श्री मदनलाल मुकेश कुमार जैन ने किया। सभा मण्डप का उद्घाटन श्री के.के. जैन सूरजमल विहार दिल्ली ने किया। सभा में मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुनीलकुमार जैन विश्वासनगर दिल्ली, श्री राकेशकुमार जैन खेकड़ा, श्री विमलकुमार जैन नीरू केमिकल्स दिल्ली, श्री आदीश जैन रोहिणी, श्री नवीनकुमार जैन शान्ति मौहल्ला दिल्ली, अजितप्रसाद जैन दिल्ली आदि श्रेष्ठीगण उपस्थित थे। स्थानीय विद्वानों के रूप में डॉ. सुदीपजी शास्त्री, डॉ. अशोकजी गोयल, ब्र. विनोदजी जैन खेकड़ा, पण्डित सुमतप्रकाशजी बड़ौत, पण्डित श्रीपालजी बड़ौत, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित संजीवजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री, पण्डित दीपेशजी शास्त्री, पण्डित शाकुलजी शास्त्री, पण्डित सुमितजी शास्त्री, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित अनुरागजी शास्त्री आदि विद्वान उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. वीरसागरजी शास्त्री द्वारा मार्मिक प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् विभिन्न नगरों से आये प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों, नगर के शिविर प्रभारियों एवं विद्वानों को सम्मानित किया गया।

शिविर का संयोजन पण्डित गौरवजी शास्त्री बावली, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली द्वारा किया गया। शिविर के निर्देशक पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर थे।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

सागर (म.प्र.) : यहाँ अंकुर कॉलोनी, मकरोनिया में मुमुक्षु मण्डल के विशेष निमंत्रण पर दिनांक 13 अप्रैल से 13 मई तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विषय पर कक्षाएँ ली गईं। इस अवसर पर पहले गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक का विषय एवं बन्ध सत्व आदि 10 करणों का विषय पढाया गया।

इसके अतिरिक्त कटरा बाजार स्थित महावीर चैत्यालय में एक प्रवचन, तारण–तरण चैत्यालय में एक प्रवचन एवं रामपुरा के स्वाध्याय मण्डल में दो प्रवचन हुए। इन सभी स्थानों पर गुणस्थान विषय को पढने हेतु विशेष जिज्ञासा व्यक्त की गई एवं उन्हें भविष्य में आने का निमंत्रण दिया गया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

1. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधना नगर एरोड्रम रोड़ स्थित पंचबालयति जिनालय पर श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस 11वें वर्ष भी ग्रीष्मकालीन आठ दिवसीय जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 6 से 13 मई 2012 तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 800 बच्चों एवं साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

कार्यक्रम के प्रमुख संयोजक श्री विजयजी बड़जात्या एवं पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल थे।

2. जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर में दिनांक 5 से 17 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी द्वारा प्रतिदिन बारह भावना पर प्रवचन, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बालबोध की कक्षा, पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना व पण्डित चन्द्रप्रभातजी शास्त्री बड़ामलहरा द्वारा छहढाला की कक्षा एवं पण्डित संजीवजी गोधा द्वारा विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 16 जून को सभी विद्यार्थियों की परीक्षाएँ ली गई एवं दिनांक 17 जून को समापन समारोह के अवसर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

शिविर में श्री नथमलजी झांझरी परिवार का विशेष सहयोग रहा।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान की धर्मपत्नी श्रीमती वर्षा जैन ने यू.जी.सी. द्वारा आयोजित नेट–जे.आर.एफ. की परीक्षा जैनदर्शन विषय में उत्तीर्ण की है।

आपने लाडनूँ विश्वविद्यालय से दूरस्थ शिक्षा द्वारा जैनदर्शन से एम.ए. किया है। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व आपने एम.कॉम. भी किया हुआ है।

इस उपलब्धि पर टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

97 दूसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आज कुछ लोग समझते हैं कि कार्य मुक्त (रिटायर्ड) हो जाने पर बुढ़ापे में यह काम करेंगे।

ऐसे लोग बहुत बड़े धोखे में हैं; क्योंकि जब जीवन भर समर्पित भाव से अध्ययन–मनन–चिन्तन करते हैं; तब बुढ़ापे में कुछ लिखने योग्य होते हैं। काम के योग्य न रहने से जब सरकार आपको मुक्त कर देती है; आपको बिना काम किये ही पेंशन देकर आपसे छुटकारा पाती है, तब आप यह महान कार्य करेंगे। **अरे, भाई ! जो जीवन भर करेगा, वह बुढ़ापे में भी कर सकता है; पर जिसने अपना महत्त्वपूर्ण जीवन तो घृत–लवण–तेल–तंडुल में बिता दिया, वह यदि बुढ़ापे में कुछ करने काप्रयास करेगा तो जिनवाणी को विकृत करने के अलावा कुछ नहीं कर पावेगा।**

जयपुर में उस समय जैनियों के १० हजार घर थे। उस समय सम्मिलित परिवार की परम्परा थी। अत: एक परिवार के १० सदस्य भी मानें तो १ लाख दिगम्बर जैन जयपुर में रहते थे।

उस समय राजा की मंत्री परिषद में ९ जैन मंत्री थे। उनमें बालचंदजी छाबड़ा और रतनचन्दजी दीवान प्रमुख थे।

जब इन दोनों को इस बात का पता चला तो वे इस दिशा में सक्रिय हो उठे। परिणामस्वरूप पण्डित टोडरमलजी को अति आग्रह पूर्वक जयपुर लाया गया और उनकी सम्पूर्ण व्यवस्था की गई। उनके साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने का काम बड़े पैमाने पर किया गया।

आठ–दस प्रतिलिपिकार विद्वानों की व्यवस्था की गई, वे लोग टोडरमलजी की कृतियों की प्रतिलिपियाँ किया करते थे। उन प्रतिलिपियों को जहाँ–जहाँ स्वाध्याय की शैलियाँ थीं, वहाँ–वहाँ पहुँचाई गईं।

यह तो सर्वविदित ही है कि मृत्युदण्ड के बाद उनका सभी सामान जब्त कर लिया गया था। उस सामान की लिस्ट हमें प्राप्त हुई है। उस लिस्ट में जो–जो सामान लिखे गये हैं, उन्हें देखने से लगता है कि वे एक सम्पन्न गृहस्थ थे। उनके मकान में नौकर के सपरिवार रहने की व्यवस्था भी थी। नौकर के घर में प्राप्त सामान की भी लिस्ट बनाई गई थी, उस लिस्ट को देखने से लगता है कि वह लिस्ट भी ऐसी नहीं थी कि जिसे देखने पर ऐसा लगे कि वह साधन हीन था।

ध्यान रहे, नौकर का सामान उसे वापिस दे दिया गया था।

उक्त सम्पूर्ण कथन का तात्पर्य यह है कि समाज द्वारा की गयी व्यवस्था साधारण नहीं थी, अपितु पण्डितजी की गरिमा के अनुरूप थी।

यह सब उचित ही था; क्योंकि गृहत्यागी ब्रह्मचारियों की व्यवस्था भी तो समाज करता ही है। उसमें तो समाज इस बात का भी ध्यान नहीं रखता कि उन त्यागी ब्रह्मचारियों के द्वारा धर्म व समाज की कुछ सेवा हो रही है या नहीं।

जयपुर आने के बाद पण्डित टोडरमलजी ने आत्मानुशासन की टीका लिखी और मोक्षमार्गप्रकाशक आरंभ किया। जब मोक्षमार्गप्रकाशक का सातवाँ अधिकार लिखा जा रहा था, तभी बीच में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय की टीका भी आरंभ कर दी।

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय की टीका के मंगलाचरण में मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार की छाया स्पष्टरूप से देखी जा सकती है।

उनके असमय में निधन से मोक्षमार्गप्रकाशक और पुरुषार्थ–सिद्ध्युपाय टीका–ये दोनों ही ग्रंथ अधूरे रह गये हैं।

यह समाज का दुर्भाग्य ही समझो कि जब वे पूर्ण निश्चिन्त होकर जिनवाणी की सेवा में सम्पूर्णत: समर्पित हुए तो सामाजिक राजनीति के शिकार हो गये।

यदि वे अधिक काल तक हमारे बीच रह पाते तो उनके द्वारा जो काम होता, उसका अनुमान सहज लगाया जा सकता है; पर जो काम वे कर गये हैं, वह भी कम नहीं है।

यदि हम चाहें तो प्राप्त मोक्षमार्गप्रकाशक से सन्मार्ग प्राप्त कर सकतेहैं।

पण्डितजी ने यह रहस्यपूर्णचिट्ठी विक्रम संवत् १८११ में लिखी थी। तब उनकी उम्र ३३–३४ वर्ष की रही होगी। यह तो स्पष्ट ही है कि उस समय वे इतनी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। तब भी उन्हें स्वानुभव की चर्चा करनेवालों की जयपुर में कमी लगती थी। ऐसी स्थिति में सिंघाणां में उन्हें इसप्रकार की चर्चा करनेवाला कौन मिला होगा ?

तात्पर्य यह है कि उन्हें सिंघाणा जाने का विचार मात्र आजीविका के लिए आया होगा। **गृहस्थ विद्वानों की यह मजबूरी है कि वे अपने रहने का स्थान और काम अपनी रुचि से नहीं चुन सकते। अत: उनके स्थान और काम को उनकी रुचि का द्योतक नहीं माना जा सकता।**

जिन लोगों ने आत्मकल्याण की भावना से ब्रह्मचर्य व्रत लिया है और बाप–दादों की सम्पत्ति से जीवन–यापन करने योग्य आर्थिक व्यवस्था, जिन्हें सहज ही उपलब्ध है; उन सौभाग्यशाली लोगों को तो ऐसा स्थान और ऐसा काम चुनना चाहिए कि जहाँ और जिसमें जिनवाणी के अध्ययन–अध्यापन की सुविधा हो।

यदि जिनागम और परमागम का गहरा अध्ययन नहीं है तो ऐसा स्थान चुनना चाहिए, जहाँ उन्हें पढ़ानेवाले उपलब्ध हों; और काम भी ऐसा ही चुनना चाहिए कि जो जिनवाणी के प्रचार–प्रसार में सहयोगीहो।

यदि वे स्वयं इतने योग्य हैं कि उन्हें किसी अन्य से पढ़ने की आवश्यकता नहीं है, वे स्वयं सबसे ऊपर हैं तो उन्हें ज्ञानदान (पढ़ने–पढ़ाने) के काम में लगना चाहिए और ऐसे स्थान पर रहना चाहिए कि जहाँ उन्हें उनसे कुछ सीखने के सत्पात्र लोग उपलब्ध हों। यदि जिनवाणी की सेवा करने की पात्रता हो तो वह करना चाहिए।

यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो समझना चाहिए कि उन्हें आत्मकल्याण की सच्ची रुचि नहीं है तथा जैन तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में भी रस नहीं है। जिन कामों में कषायभाव की वृद्धि होती हो और जिन कामों में हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह संग्रह – पाँचों पापों की प्रवृत्ति सामान्य गृहस्थों के समान ही होती हो; उसमें ही उत्साहपूर्वक उलझे रहते हों तो फिर उनके ब्रह्मचर्य व्रत लेने का क्या लाभ है ?

भाग्य की बात है कि टोडरमलजी को यह सुविधा प्राप्त नहीं थी, पर साधर्मी भाई रायमलजी को यह सुविधा प्राप्त थी। ब्र. रायमलजी ने अपने जीवन में इसका पूरा–पूरा लाभ उठाया। वे टोडरमलजी के पास सिंघाणा और जयपुर में रहे तथा जिनवाणी की सेवा तथा वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में स्वयं को समर्पित कर दिया।

पण्डित टोडरमलजी गृहस्थ विद्वान थे और साधर्मीभाई ब्रह्मचारी रायमलजी त्यागी–व्रती थे; फिर भी ब्र. रायमलजी स्वयं को पण्डित टोडरमलजी का सहयोगी ही समझते थे, उनसे तत्त्वज्ञान सीखने की भावना रखते थे, उनके लिए सभी सुविधायें जुटाने में संलग्न थे, उनकी पूरी अनुकूलता का ध्यान रखते थे।

वे चाहते थे कि उनसे जितना अधिक लिखवा लिया जाय, उतना अच्छा है; क्योंकि वे समझते थे कि जिनवाणी की सेवा जितनी अच्छी पण्डितजी से हो सकती है, उतनी उनसे नहीं।

कैसी विचित्र विडम्बना है कि महापण्डित टोडरमलजी तो सिंघाणा अपनी आजीविका के लिए गये थे; पर साधर्मी भाई ब्र. रायमलजी पण्डित टोडरमलजी के सत्समागम के लिए गये थे।

उस युग में इन दो मल्लों (टोडरमल और रायमल) की जोड़ी ने जो कमाल कर दिखाया; उससे आज भी हम सब उपकृत हैं।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के सान्निध्य में ब्रह्मचर्य लेने वाले आत्मार्थियों की वृत्ति और प्रवृत्ति भी ऐसी ही थी; पर आजकल इसमें कुछ शिथिलता आती जा रही है।

आज के बहुधंधी ब्रह्मचारियों को पण्डित टोडरमलजी, साधर्मी भाई रायमलजी एवं स्वामीजी के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, उनके जीवन से कुछ सीखना चाहिए।

इसके बाद पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''सो भाईजी, तुमने प्रश्न लिखे उनके उत्तर अपनी बुद्धि अनुसार कुछ लिखते हैं सो जानना और अध्यात्म आगम की चर्चागर्भित पत्र तो शीघ्र दिया करें, मिलाप तो कभी होगा तब होगा। और निरन्तर स्वरूपानुभवन का अभ्यास रखोगेजी। श्रीरस्तु।''

अबतक औपचारिकता की बातें चल रही थीं; अब उनके प्रश्नों के उत्तर लिखे जावेंगे, जिनकी चर्चा अगले प्रवचनों में होगी।

ज्ञानीजनों की औपचारिकता में भी महानता होती है, विनम्रता होती है, कुछ जानने लायक होता है, कुछ सीखने लायक होता है।

देखो, उक्त वाक्यखण्ड में भी उनकी निरभिमानी विनम्रता झलकतीहै।

चारों अनुयोगों के प्रतिपादक शास्त्रों को आगम और अध्यात्म के प्रतिपादक शास्त्रों को परमागम कहते हैं।

वे उनसे ऐसे ही आगम और अध्यात्मगर्भित पत्र लिखने का अनुरोध करते हैं; क्योंकि यातायातविहीन उस युग में सुदूरवर्ती आत्मार्थी भाई–बहिनों से मिलाप होना इतना आसान नहीं था।

पण्डितजी को इसप्रकार के पत्राचार में कोई रस नहीं था; जिसमें राजनीति की चर्चा हो, सामाजिक झगड़ों की चर्चा हो या घर–गृहस्थी की बातें हों। वे तो निरन्तर आगम और अध्यात्म में ही मग्न रहना चाहतेथे।

उससे भी अधिक महत्त्व उनकी दृष्टि में स्वरूपानुभवन का था। इसलिए वे लिखते हैं कि भले पत्र न दे सको तो कोई बात नहीं, पर आत्मा के अनुभव का प्रयत्न निरन्तर करते रहना; क्योंकि निरन्तर करने योग्य कार्य तो एकमात्र आत्मा के अनुभव का प्रयास करते रहना ही है।

करणानुयोग के उच्च कोटि के विद्वान होने पर भी आत्मानुभव की इतनी लगन बहुत कम लोगों में देखने को मिलती है। प्राय: देखा तो यह जाता है कि करणानुयोग के अभ्यासी उसी में लगे रहते हैं; आत्मानुभव की चर्चा तक नहीं करते हैं। करते भी हैं तो बहुत कम, वह भी अरुचिपूर्वक।

इसीप्रकार आत्मा के अनुभव की बात करनेवालों को करणानुयोग नहीं रुचता; पर पण्डितजी की यह विशेषता है कि वे करणानुयोग के साथ–साथ अध्यात्म के भी पारंगत विद्वान थे और दोनों का संतुलन जैसा उनके जीवन में देखने में आता है, वैसा अन्यत्र अत्यन्त दुर्लभ है। ●

2 जुलाई 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2012 तक आयोजित होने जा रहा है।

आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें; ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

पंचम बाल संस्कार शिविर संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 27 मई से 3 जून तक पंचम बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित स्वतन्त्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा, पण्डित रवीन्द्रजी बकस्वाहा, पण्डित अंकितजी शास्त्री खड़ैरी एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

शिविर में प्रौढ, बाल व शिशु वर्ग की पाँच कक्षाओं का आयोजन किया गया और अन्तिम दिन परीक्षाएँ भी हुई। इस शिविर के माध्यम से लगभग 200 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

शिविर का उद्घाटन श्री सुनीलजी इंजी. परिवार छतरपुर ने एवं ध्वजारोहण श्री दीपचन्दजी हीरापुर ने किया। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स दिल्ली थे।

दिनांक 3 जून को समापन समारोह के अवसर पर परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

संपूर्ण शिविर का संयोजन व संचालन पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

वैराग्य समाचार

भिण्डर-उदयपुर (राज.) निवासी श्री छोगालालजी बालावत का दिनांक 29 अप्रैल को 80 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

सुखी होने का उपाय

अनादिनिधन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न अपनी मर्यादा सहित परिणमित होती हैं, कोई किसी के आधीन नहीं हैं, कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होती।

मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ 52

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127